The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का अध्ययन

शेख अंजुम निशा

एम0 एड0 छात्रा, गौतम बुद्व डिग्री कॉलेज, बिजनौर रोड लखनऊ

shaikhanjum33786@gmail.com

अर्चना शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसरए शिक्षाशास्त्र विभाग, गौतम बुद्व डिग्री कॉलेज, बिजनौर रोड लखनऊ

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20699684

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-05-2026

Published: 10-06-2026

Keywords:

सृजनात्मकता, माध्यमिक स्तर, यू0पी0बार्ड, सी0बी0एस0ई0 बोर्ड ।

ABSTRACT

शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया नही है , बल्कि यह सोचने, समझने और नए विचारों को जन्म देने की क्षमता को विकसित करने का माध्यम है। लब शिक्षा को सृजनात्मकता के साथ जोड़ा जाता है तो यह एक ऐसे वातावरण का निर्माण करती है जहॉ छात्र केवल तथ्यों को याद नही करते, बल्कि उन्हे नए दृष्टिकोण से देखने और उपयोग करने में सक्षम होते है। सृजनात्मकता शिक्षा को जीवन्त बनाती है। जिससे सीखने की प्रक्रिया रोचक और प्रभावशाली हो जाती है यह छात्रों को समस्याओं के समाधान के लिए नवीन तरीके अपनाने प्रयोग करने और स्वतन्त्र रूप से सोचने के लिए प्रेरित करती है। आज के बदलते समय में कचल पारंपरिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है। उसमे नवाचार और कल्पनाशक्ति का समावेश आवश्यक है। आज के आधुनिक युग में जहॉ तकनीकी और प्रतिस्पर्धा तेजी से बढ़ रही है। वहॉ केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नही है। विद्यार्थियों में सृजनात्कम सोच का विकास अत्यन्त आवश्यक हो गया है ताकि बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल सके और नए अवसरो का निर्माण कर सके उदाहरण के लिए विज्ञान, कला, तकनीक और साहित्य सभी क्षेत्रों में सृजनात्मकता ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है। इस प्रकार, शिक्षा और सृजनात्मकता का संगम एक ऐसे समाज का निर्माण करता है जो न केवल शिक्षित होता है बल्कि नवाचार और प्रगति की दिक्षा में भी आगे बढ़ता है यह संयोजन भविष्य के ऐसे नागरिक तैयार करता है जो जिम्मेदार कल्पनाशील और समाधान– उन्मुख होते है और समाज को नई ऊॅचाइयों तक ले जाते है। प्रस्तुत

शोध पत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया है। जहॉ माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 6 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों से है जिसके अन्तर्गत हाईस्कूल के यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध पत्र के अन्तर्गत प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। जिसमें हाईस्कूल के यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बीएस0ई0 बोर्ड के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, यह प्रतिदर्श लखनऊ जिले के एल0 डी0 ए0 कॉलोनी के न्यू पब्लिक इंटर कॉलेज तथा सिटी मॉडल पब्लिक स्कूल से लिया गया जिसमें 25 छात्र एवं 25 छात्राएँ यू0पी0 बोर्ड की तथा 25 छात्र एवं 25 छात्राए सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की थी। डाटा एकत्र करने के लिए डा0 बी0 के0 पासी द्वारा निर्मित पासी टेस्ट ऑफ क्रिएटिविटी जो मानकीकृत भारतीय परीक्षण उपकरण है का प्रयोग किया गया। जहॉ पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों की सृजनात्कमा का तुजनात्मक अध्ययन करने पर मध्यमान (m=91.2 तथा 89.76), मानक विचलन (SD=52.18 तथा 45.84) एवं टी–टेस्ट (t=13.8) तथा स्वतन्त्र कोटि का मान (dof=48) और सार्थकता स्तर (P=0.05) पर यू0पी0 बोर्ड का सारणी मान 2.01 तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड का सार्थकता स्तर (P=0.01) पर सारणी मान 2.68 प्राप्त हुआ है। वही पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर मध्यमान (m=123.08, 140.54), मानक विचलन (SD=62.79, 75.70) एवं टी–टेस्ट का मान (t=19.06) तथा स्वतन्त्र कोटि का मान (dof=48) प्राप्त हुआ है अतः सार्थकता स्तर **0.05** पर यू0पी0 बोर्ड का सारणी मान (2.01) तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड का सारणी मान (2. 68) प्राप्त हुआ है। लिंग तथा बोर्ड के आधार पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्र और छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई अन्तर नही पाया गया।

सृजनात्मकता का अर्थ – सृजनात्मकजा का संबंध सृजन से होता है। इसमें विविध प्रकार की मूर्त एवं अमूर्त गतिविधियों का सृजन किया जाता है जैसे कवि अपने मनोभाव को कविता के रूप में प्रकट करता है। निबन्धकार अपने भावों एवं विचारों को निबंध के रूप में प्रकट करता है तथा कहानीकार कहानी के रूप्प में भवों एवें विचारो को प्रकट करता है। इस प्रकार विविध प्रकार के भावों एवं विचारो के आधार पर संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया सम्पन्न करते हुये मूर्त एवं अमूर्त सृजन सम्पन्न होता है। ये सभी गुण जिन बालको में पाये जाते है उन बालकों को सृजनात्कम बालक कहते है। प्रो0 एस0 के दुबे ने लिखा है कि सृजनात्मक बालक द्वारा विविध प्रकार की कल्पनाओ

का सृजन का सृजन किया जाता है तथा उनका परीक्षण करके सत्य परिकल्पनाओं को स्वीकार करते हुए उन्हे मूर्त, अमूर्त सिद्वान्त एवं नियम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तथा विविध प्रकार की मूर्त एवं अमूर्त स्थितियों का सृजन किया जाता है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि सृजनात्मकता प्रखर बुद्धि छात्र–छात्राओं का गुण है। जिनमें चिन्तन, तर्क, एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पाया जाता है, इसी आधार पर यह अनुसंधान सम्बन्धी कार्यो को सम्पन्न करता है। अतः सृजनात्मक सृजन से सम्बन्धित होती है चाहे वह सृजन मूर्त रूप में हो सकता है या अमूर्त रूप में हो सकता है। अपने वास्तविक अर्थ में सृजनात्मकता का मतलब है कुछ नया सोचने, बनाने या अभिव्यक्त करने की क्षमता। इस में कल्पना, नवाचार और सामान्य से हटकर सोचने की शक्ति शामिल होती है। यह कला, विज्ञान, लेखन, संगीत या किसी भी क्षेत्र में हो सकती है जहॉ नया विचार या समाधान सामने लाया जाता है।

सृजनात्मकता की परिभाषाएॅ–

- टेलर के अनुसार, **सृजनात्मकता का अर्थ है किसी नई और उपयोगी वस्तु या विचार को उत्पन्न होना।**
- जे.पी. गिलफोर्ड के अनुसार, **सृजनात्मकता वह क्षमता है। जिसके द्वारा व्यक्ति ऐसे विचार उत्पन्न करता है। जो नवीन नए और उपयुक्त उपयोगी होती है।**
- डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार, **सृजनात्मकता और नवाचार का अर्थ है न केवल सोचने की क्षमता, बल्कि उसे सही दिशा में कार्य में परिणाम करने की क्षमता यह भारत के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होने सृजनात्मकता को नई सोच नवाचार के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के रूप में दखा।**

सृजनात्मकता के तत्व–

- **प्रवाह** – प्रवाह से तात्पर्य अनेक प्रकार के विचारो की खुली अभिव्यक्ति है। ये अभिव्यक्ति चार प्रकार की होती है –

  1– विचारो की अभिव्यक्ति।

  2– शब्द प्रवाह।

  3– अभिव्यक्ति प्रवाह।

  4– साहचर्य प्रवाह ।
- **लचीलापन** – इसका तात्पर्य विविधता से है अर्थात् किसी भी समस्या के आने पर उसक समाधान के लिए व्यक्ति अनेक विचारों को प्रस्तुत करता है। इसके द्वारा हमें यह पता चलता है कि व्यक्ति एक ही समस्या को कितने तरीको से समाधान कर सकता है।
- **मौलिकता** – जब व्यक्ति के सामने समस्या आती है तथा वह उसके समाधान के लिए अन्य लोगो से भिन्न उत्तर प्रस्तुत करता है तो कहा जाता है कि उसमें मौलिकता का गुण है। दूसरे शब्दों में मौलिकता नीवनता से सम्बन्धित होती है व्यक्ति अन्य लोगों से भिन्न उत्तर प्रस्तुत करता है उसे मौलिकता कहा जाता है।

- **विस्तारण–** विचारों को बढ़ा–चढ़ा कर बताना अर्थात एक ही विचार को बढ़ा–चढ़ा कर संगठित रूप से प्रस्तूत करना है इसको भी दो भागों में बॉटा गया है–
  1– शाब्दिक विस्तारण।
  2– आकृतिक विस्तारण।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

सृजनात्मकता मानव के विकास एवं प्रगति की धुरी है। सृजनात्मकता का गुण सभी व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पाया जाता है। मानव के विकास एवं प्रगति में सृजनात्मकता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विभिन्न शोध साहित्य सर्वेक्षणों का अध्ययन करने पर यह पाया गया है कि सृजनात्मकता के संदर्भ में जो अध्ययन प्रकाश में आये है। उनसे यह अवगत होता है कि इस दिशा में हुए कार्य प्राय– मूल्य, रूचि, संस्कृति, स्थिरता और भग्नाशा के मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने और वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा जैविकीय ऑकडों के आधार पर हुआ है। माध्यमिक सतर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता से सम्बन्धित बहुत से शोध कार्य हुए है किन्तु लखनऊ जिले के सन्दर्भ में इस कार्य को न के बराबर किया गया है। अतः शोध छात्रा यह जानना चाहती है कि सरकार द्वारा वर्तमान में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए क्या कार्य किए जा रहे है? तथा विद्यालयों में किस प्रकार विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को सुरक्षित रखा और सहेजा जा रहा है और उनकी सृजनात्मकता को बढाने के लिए किन गतिविधियों को कराया जा रहा है। इस कारण इस विषय पर अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

समस्या कथन– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का अध्ययन।

शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन–

- **कपूर, राधिका एट ऑल (2022)** ने शैक्षिक सुधार और भारतीय स्कूलों में रचनात्मकता पर उनका प्रभाव पर अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि NEP 2020 के सुधारों ने आलोचनात्मक सोच अंतः विषयक शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सी0बी0एस0ई0 स्कूलों में रचनात्मकता को बढ़ावा देने के शुरूआती संकेत दिखाए।
- **खान & शर्मा (2024)** ने सी0बी0एस0ई0 बनाम यू0पी0 बोर्ड के छात्रों में रचनात्मकता का आधुनिक विश्लेषण पर अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि रचनात्मकता परीक्षणों में सी0बी0एस0ई0 के छात्र लगातार यू0पी0 बोर्ड के छात्रों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे है। जिसका श्रेय सी0बी0एस0ई0 द्वारा अनुभवात्मक शिक्षा और अतः विषयक परियोजनाओं पर दिए गए जोर को जाता है।
- **सलोनी & कुमार, अरूण एट ऑल (2024)** यह शोध कक्षा 7 के विज्ञान के छात्रो की सृजनात्मक सोच पर मस्तिष्क आधारित सीखने की रणनीतियों के प्रभाव को जानने के लिए किया गया शोधकर्ता ने प्रयोगात्मक शोध

पद्वति और पूर्व–परीक्षण उत्तर परीक्षण दो समूह डिजाइन का उपयोग किया यह अध्ययन आगरा के एस डी. इण्टर कॉलेज के कक्षा 7 के 60 छात्रो पर किया गया था जिनका चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्वति से किया गया था छात्रो को सरल यादृच्छिक नमूना पद्वति से दो समूहो में बॉटा गया, जबकि नियन्त्रित समूह को पारंपरिक तरीके से पढ़ाया गया आकड़ो के विश्लेषण के लिए माध्य, माध्यिका, टी– परीक्षण का उपयोग किया गया। शोध के नतीजे से पता चला की प्रयोगिक समूह के छात्रों की सृजनात्मकता सोच बेहतर रही है और निरून्त्रित समूह के छात्रों का प्रदर्शन सृजनात्मक सोच मे बहुत कम रही है।

- **झांग & इलिंग, जी. (2025)** यह शोध कार्य हाईस्कूल के सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए 18 सप्ताह इंटरडिसिप्लेनरी इंटीग्रेशन कोर्स के प्रभाव पर है। यह अध्ययन चाइना में किया गया। चाइना के एक पब्लिक स्कूल के 150 दसवीं के छात्रों पर क्वासी एक्सपेरिमेंटल अध्ययन किया गया इसमें दो ग्रुप बनाए गए– एक्समेरिमेन्टल ग्रुप, कन्ट्रोल ग्रुप । मुख्य रूप से यह परिणाम प्राप्त हुए कि इंटीग्रेटेड कोर्स ने छात्रो की ओवरऑल सृजनात्मक सोच को सिंगल सब्जेक्ट कोर्स की तुलना में ज्यादा बढ़ाया। हालाकि एक्सपेरिमेन्टल ग्रुप और कन्ट्रोल ग्रुप के बीच कोई विशेष अन्तर नही पाया गया है।
- **गोपाल के0,कुमार (2025)** ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सृजनात्मक विकास हेतु निर्देशात्मक नीतियों के प्रभाव का अध्ययन किया। यह अध्ययन झारखण्ड में किया गया। उन्होनें बताया कि कैसे नई शिक्षा नीति शिक्षार्थियों मे नवाचार और सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है। इस अध्ययन में आदिवासी छात्रों को शामिल किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सह अन्वेषणात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया। अध्ययन में टी परीक्षण तथा संहसम्बंध विधि का उपयोग डाटा विश्लेषण के लिए किया गया। यह शोध शिक्षा नीति–निर्माताओं, शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं पाठ्यक्रम निर्माताओं को आदिवासी क्षेत्रों में प्रभावी शिक्षण रणनीतियॉ अपनाने हेतु उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण–

- **सृजनात्मकता–** सृजनात्मकता जिसे अंग्रेजी में **CREATIVITY** कहते है। इसे सरल शब्दों में रचनात्मकता भी बोला जाता है। सृजनात्मकता से मतलब नई या नवीन चीजें बनाना, कुछ नया सोचना, कल्पना करना आदि से है। यह किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो सकती है जैसे– कला, लेखन, विज्ञान,संगीत, तकनीकी तथा किसी समस्या को हल करने के नए तरीके आदि। रचनात्मक व्यक्ति अपनी कल्पनाशीलता और नवाचार से कुछ नया और अद्वितीय बना सकता है।
- **माध्यमिक स्तर –** प्राथमिक स्तर के बाद माध्यमिक स्तर आता है। माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत कक्षा 6 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थी आते है। अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा में यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड दोनों को सम्मिलित किया गया है–

माध्यमिक स्तर

- **यू0पी0 बोर्ड–** यह उत्तर प्रदेश राज्य का शिक्षा बोर्ड है जो हाईस्कूल की परीक्षाओं का संचालप करता है। इसे 1921 में स्थापित किया गया था इसका मुख्यालय प्रयागराज में स्थित है।
- **सी0बी0एस0ई0 बोर्ड–** इसका पूरा नाम केन्द्रीय माध्यमिक परीक्षा परिषद है। जिसे अंग्रेजी मे **Central Board of Secondary Education** कहते है। यह भारत सरकार के अधीन एक राष्ट्रीय स्तर का शिक्षा बोर्ड है जो पूरे देष में 10 वीं की परीक्षा का आयोजन करता है यह बोर्ड 1962 में स्थापित किया गया था और इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों मे सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

2–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड के विद्यार्थियों मे सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

3–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

4–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं–

1–प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय उद्देश्य के लिए किसी भी परिकल्पना का निर्माण नही किया गया ।
2– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों में सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।
3– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं में सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

न्यादर्श– शोध अध्ययन में यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया । जिसके अन्तर्गत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 25 यू0पी0 बोर्ड की छात्राए तथा 25

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राए एवं 25 यू0पी0 बोर्ड के छात्र तथा 25 सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रो को शामिल किया गया।

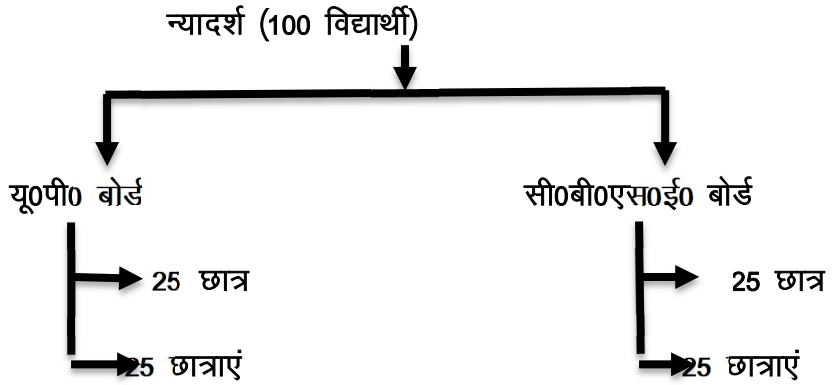

अध्ययन का परिसीमांकन–

1–प्रस्तुत शोध को यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के हाईस्कूल के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।

2–प्रस्तुत शोध को लखनऊ जिले तक ही सीमित किया गया है।

3–प्रस्तुत शोध को एल0डी0ए0 कॉलोनी,लखनऊ के दो स्कूलों तक सीमित रखा गया है।

शोध उपकरण–

पासी टेस्ट ऑफ क्रिएटीविटी– डॉ0 बी0के0 पासी (रिटायर्ड प्रोफेसर एण्ड हेड ऑफ एजुकेशन देवी आलिल्य, इन्दौर यूनिवर्सिटी)।

सांख्यिकीय विधियॉ–

1–माध्य

2–माध्यिका

3–प्रामाणिक विचलन

4–टी– परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण– प्रदत्तों को सारणीबद्व करने के लिए तथा निष्कर्षों को जानने के लिए प्रदत्तों का विश्लेषण करना शोध प्रक्रिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है। अतः सारणीबद्व प्रदत्तों के आधार पर विश्लेषण तथा व्याख्या को निम्न प्रकार से किया गया जिसका उद्देश्यवार परिकल्पना सहित विवश्रण तथा व्याख्या की गई है–

उद्देश्य (04)– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना (H2)– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों में सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी संख्या–1

क्रम संख्या	बोर्ड	विद्यार्थियो की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक–विचलन (SD)	टी–परीक्षण मान (T)	स्वतन्त्र कोटि (DOF)	सार्थ–कता स्तर (P)	सारणी मान	परिणाम
1	यू0पी0 बोर्ड के छात्र	25	91.2	52.18	13.8	48	0.05	2.01	अस्वीकृत
2	सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्र	25	89.76	45.84			0.01	2.68	अस्वीकृत

सारणी एक का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हाई स्कूल के यू0पी0 बोर्ड के छात्रों का मध्यमान 91.2 तथा सी0बी0एस0ई बोर्ड के छात्रों का मध्यमान 89.76 प्राप्त हुआ तथा यू0पी0 बोर्ड के छात्रों का मविचलन 52.18 तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों का मानक विचलन 45.84 है। जबकि डिग्री ऑफ फ्रिडम 48 है अतः सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 2.01 है जहॉ पर यह परिकल्पना अस्वीकृत है तथा 0.01 पर सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.68 है जो यह बताता है कि .05 सार्थकता स्तर पर और .01 सार्थकता स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के हाई स्कूल के छात्रों का सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर परिकल्पना में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत कि जाती है। अतः दोनों बोर्ड के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्तर समान ही है।

उद्देश्य (05) – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना (H3)– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं में सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी–2

क्रम संख्या T	बोर्ड	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक–विचलन (SD)	टी–परीक्षण मान (T)	स्वतन्त्र कोटि (DOF)	सार्थकता स्तर (P)	सारणी मान	परिणाम
1	यू0पी0 बोर्ड की छात्राए	50	123.08	62.79	19.06	48	0.05	2.01	अस्वीकृत
2	सी0बी0एस0ई0 बार्ड की छात्राए	50	140.54	75.70			0.01	2.68	अस्वीकृत

द्वितीय सारणी का अवलोकन करने सें यह स्पष्ट हो जाता है कि माध्यतिक स्तर पर अध्ययनरत हाई स्कूल की यू0पी0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान 123.08 तथा मानक विचलन 62.79 प्राप्त हुआ है। जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हाई स्कूल की सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान 140.54 तथा मानक विचवलन 75.70 और टी– वैल्यू 19.05 प्राप्त हुई है तथा डिग्री ऑफ फ्रीडम 48 है। अतः सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 2.01 है तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणी मान 2.68 है जो यह बताता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता के लिए बनाई गई परिकल्पना में कोई अन्तर नही है। यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हाईस्कूल के यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता का स्तर समान है अर्थात् कोई अन्तर नही पाया गया।

निष्कर्ष– आकडों के विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है–

1– यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्रों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया दोनों में समान सृजनात्मकता पायी गई।

2– यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया है दोनें में समान सृजनात्मकता पायी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Refrence)-

- आस्थाना,विपिन& श्वेता (2011) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा।
- मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (2011) सामाजिक शोध व सांख्यिकी अथवा सामाजिक अनुसंधान की विधियॉ, विवेक प्रकाशनः नई दिल्ली।
- लाल, रमन बिहारी (2017) भारतीय शिक्षा का विकास, लाल पब्लिकेशन।

- सिंह,अरूण कुमार (2017) मनोविज्ञान,समाजशास्त्र और शिक्षा में अनुसंधान विधियां, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली।
- गुप्ता, अरूण & सिंह (2017) समकालीन भारत शिक्षा, ठाकुर पब्लिकेशनः लखनऊ।
- जैन,सुनील & श्रीवास्तव (2017) प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास, अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा।
- मंगल,एस0के0 & पाठक (2018) अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा।
- मंगल,एस0 के0 (2019) शिक्षा मनोविज्ञान, पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेडःदिल्ली।
- गुप्ता, एस0 पी0 (2023) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि,शारदा पुस्तक भवनः प्रयागराज।
- Kapoor, Radhika (2022) Factors Influencg yhe student's academic performance in secondary school in india.
- Saloni & kulshrestha, A.K. (2024). Effect of brain based learning strategies on creative thinking of middle level students.shodhkosh journal of visual and performing arts (5)5 pp 578-580. https://doi.org/1029121/sodhkosh.v5.i5.2024
- Zhang,E & Zhang, Z.(2025) Form algorithams to artistry through interdisciplinary integration of creative coling and smart design Thinking skill and creativity.(58),2 doi https:/dpi.org/10.1016/j.tsc.2025.101910

  https://www.sciencedirect.com/science /article/pii/S1871187125001609
- गेपाल कृष्ण कुमार (2025) उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सृजनात्मक विकास हेतु निर्दे''ात्मक नीतियों के प्रभाव का अध्ययन,इंटरने''ानल जर्नल ऑफ लिटरेसी एण्ड एजुके''ान(5)1 पेज–354–359. http://www.doi.org/10.22271/27891607.2025.v5.ile.291